

































































श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री	श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री		•
श्रिश्च श्री श्रीस्ट्रांगादि स्थसंग्रह् ॥  १ श्री श्रीशांगरवना चित्रमां थावेवा थ्यपा श्रद्भांग्रह ॥  प्रपाना-परांग्र वार्षां-भार्षने वार्षां भार्षने वार्षां भार्षने वार्षां	श्रिश्च श्री श्रीस्ट्रांगादि स्थसंग्रह् ॥ १ श्री श्रीशांग्यना चित्रमां थावेवा थ्यारा श्रव्यांना थ्यं. मेषुण्यान-पेशुनांमा पेषुण्यान-पेशुनांमा पोरि-भारीत वार्मान-प्राप्ताना वार्मान-प्राप्तान पार्थित-प्राप्ति आप पार्थित-प्राप्ति पार्थित-प्राप्ति आप पार्थित-प्राप्ति पार्थित-पार्थित पार्थित-पार्थित पार्थित-पार्थित पार्थित-पार्थित पार्थित-पार्थित पार्थित	a Suc Suc Suc Cont Cont Cont	-
श्रिश्च श्री श्रीस्ट्रांगादि स्थसंग्रह् ॥  १ श्री श्रीशांगरवना चित्रमां थावेवा थ्यपा श्रद्भांग्रह ॥  प्रपाना-परांग्र वार्षां-भार्षने वार्षां भार्षने वार्षां भार्षने वार्षां	श्रिश्च श्री श्रीस्ट्रांगादि स्थसंग्रह् ॥ १ श्री श्रीशांग्यना चित्रमां थावेवा थ्यारा श्रव्यांना थ्यं. मेषुण्यान-पेशुनांमा पेषुण्यान-पेशुनांमा पोरि-भारीत वार्मान-प्राप्ताना वार्मान-प्राप्तान पार्थित-प्राप्ति आप पार्थित-प्राप्ति पार्थित-प्राप्ति आप पार्थित-प्राप्ति पार्थित-पार्थित पार्थित-पार्थित पार्थित-पार्थित पार्थित-पार्थित पार्थित-पार्थित पार्थित		პაინ
श्रिय श्री श्रीस्टांगादि स्यसंग्रह ॥ १ श्री शीद्यांगरयना चित्रमां थावेदा ख्यारा राज्यंना थ्यं- भगम्भान्यभाग्रा वार्यम्भान्यम्भाम्भाम्भान्यभाग्रा वार्यम्भान्यभाग्रा वार्यम्भाग्रा वार्यम्भान्यभाग्रा वार्यम्भान्यभाग्रा वार्यम्भान्यभाग्रा वार्यम्भान्यभाग्रा वार्यम्भान्यभाग्रा वार्यम्भान्यभाग्रा वार्यम्भाग्राम्भान्यभाग्राम्भानम्भान्यभाग्राम्भानम्भानम्भानम्भाग्राम्भानम्भानम्भानम्भानम्भानम्भानम्भानम्भा	श्रिय श्री शीस्त्रापादि स्यसंग्रह ॥  १ धी शीक्षांपरयना चित्रमां थावेवा छ्यत शब्दोना छ्यत.  पेषणान-भूषांग्रा  पेषणान-भूषांग्रा  पेषणान-भूषांग्रा  पोर्ति-भूषांहि-भूषांहि नात प्रमान (न) भूषि-चृत्रा प्रमान प्रमान (न) प्रमान प्रमान प्रमान (न) प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान (न) भूषि-चृत्रा प्रमान प्रमान (न) भूषि-चृत्रा प्रमान प्य	सम्बत्ता-मन्त्रमहित् सम्बत्ता महित् सम्बत्ता महित् सम्बत्ता मन्त्रम सम्बन्धा प्राप्तम सम्बन्धा प्राप्तम इत्य-नेत्रम् प्राप्तम् इत्य-नेत्रम् स्थित्तम् इत्य स्थित्या-सहित्यम् इत्य	बर-६ महुद्धे, एशा विती-स्ता
수 나는 다른 수 다 그는 다 보다 그 나는 그 그 그 그 그 그 그 그 그 그 그 그 그 그 그 그 그	स्तिन्ति । स्वतिक्रम् । स्वतिक्रम्य	श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री	आस्य-यास्यने ते-वेभी

( | सम्मत्त है, न्यहा, उर, तेषुत मने वितकु ए गार संज्ञा है, ओज ( मान ) गर्छ ( व्यांत ) वाने (कांडे काम्बे लवे लक्टोर्ड) ए पत दान लते ( मन, पचन लने काम ) आ गीम कियामी शुर्धा, पाली, नेज, शामु, बतरानि, बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, नौरेन्द्रिय, पंतिन्द्रिय ए प्रष्टपादि नव जीव-काच तथा श्वाधकाय एम रत काव हे. तथा बीजी गायामां कला। मुजब दत्रा प्रकारनो ध्रमण धर्म पूर्वी want-rant, Art St. | fernath, men wet. कूपी, पाटी, तेज, बायु, बनस्पति, बेन्डिय, तेन्डिय, चोरेन्डिय छने पंचेन्डिय तथा छजीय ए प्रमाखे महोत शिविविधिक्ष राग-राहि । ए रतिने रत प्रक्षों खारंत बर्डे. ॥६॥ ( खा रचनी वांचमी तथा ठठी गाया मूळ मळी छाबी नयो. ) १ जा रसमिथ चक्रमळ सामाचारी रयना चित्रमां व्यागेचा व्ययत झब्दोना व्यर्थ. [मार्च ( तक्त) मारा ( श्रीत ) क्षत्रे मार्ग ( माम्मी) प् पांच इन्त्रियों है. ॥ ४ ॥ | श्रिय-रूपो-नात्रश्राय दाली-यात, यां दारारात्री निवित्रान्त्री ्षिषि धापः तेतः, वाषुः वनस्पति श्रीन्डिय त्रीन्डिये ॥ क्कमार्था नर जोग, स्तजीर कारश्र असण धर्मश्र ॥ क्षान्यादि देश प्रशास क्वमिति प्रजावये देतां ॥ ५ ॥ मामा-मामा वतुत्पक्षेन्द्रिय जीवाऽऽरम्नं वजेवेद् दश्या॥ ६॥ काले-द्यामा मिशिमाराहर्वनमाति य-धने, प्रत रीने ल्या मृज माचानी जावना करती. ॥ ए ॥ Lingin-arec'herial anila-beele errais महामी-वारित मानि TELLE SENE THE STATE 一てなったがられる

frite mme m? . अस्मार्ग्याम निरंत्रा कारी .. नमनी रजा कर्ड्ड मा 75757 <u> पिट्या-मिन्याकार</u> वीजा दसविष चक्रगळ रचना चित्र बहारनी गायायोना खवरा सब्दोता खयं. रा गुन्ना मा ज्ञची-महिन " my grift's क्रीसर-क्रोपाट्टिक चार E मिर-समिति ज्यातारी-इन्जातार स माचारीबाळे (स्स-तेदा मुनीने ॥१॥ रक्षंती-राग्य कर्ता नमे-नमस्द्वार् याभ्रो यात्रो सर् गानिकाती-1 गरमित्मयक्षा FF-29 मतान व्य मारु पाप विषया बाबे रियसमित्रो-इषी सपि-AT THE 光 -प्रथ्नी कायन प्राणी-सम्यक्त क्षानबाड नग्रुति-मनग्रुतितास्त्री किरण-मारेष कर गींव गण-परवन्त्रे होसागादि रथसंपद् ॥ ५ ॥

नेवाचे परमच्यावम्तु ते उन्तंप्ताहाती-प्रात भ-समाचारि साचयतो, ग्रथियी विमेरेना जीम्त्रे रक्षण करतो जे, (सोष) रेते नगरक्तार थाछ ॥ १॥ मेश्य करतुं मे णम माटे पोगाना ग्रह पणगं च मणगुत्तो सत्राणी, पसमिय कोहो य इरिय समिओय ॥ गुढ्योजीए रख्खंतो, इच्छाकारी नमो तस्स ॥ १ ॥ मनोगुतः सङ्जानी, प्रशमित कोध श्र्ययां समित श्र्या। गुत्ती नाणाइतिगं, पसमिय कोहाइ समिड ॥ श्री दसविध चक्तवाळ सामाचारिस्थ ॥ ॻ ॥ डिमारिक्ष क्यारो तेषी-गुषिधी जीयान् रक्षन् इञ्चाकारी नमस्तरम् ॥ १ । Muchign Rent u-पारेबार गुज्यं से में क्षा छेग को है अंद्रया-भाषार खारो बाद विदेशताबा विशित-भारू ड मारी-मारासिक गोषाी बाटे वृष्ट्यार रजा माम्ब्री से ति बहेती मे tul sier anent erreit BRag-falian - ur-College Herry Mark आवृतिमा करेती से migenth-mighalf. रमसंबद्ध. Fimitie

न्नस्यादीन् रस्तन्, चक्र समाचारी युक्तश्र ॥ य ॥ प्रशासक कर्षा ३ क्रोधादिक ते जेषे प्यो, त्रास्ताविकत्रिक, पंचनमिति व्यने कड़ेवी, प्रछना ( कोड़ कार्य माटे ग्रुहने घूठबुं ), प्रतिष्रुग्ना ( यारंवार घूठबुं ), ठंदना ( कोड़ पण मित स्ताहिपनाज्ञो इग्रा॰ मिग्रा (मिग्रामिद्गमनं देष्ट्र),तहत्ति कर्यी, जतां व्यायस्तद्दी कहेवी, व्यायतां निस्सिर्ङ ताधुने निमन्त्रण करबुं ), निमंत्रणा ( आहार वान्या पहेवां निमन्त्रणकरखे), उपसंपदा गर्गारं-अनिचार<del>ने</del> (सर्ग-दर्भन (मा) नाण-ज्ञान (ना श्रय श्री त्रीजा खामणा रयना चीत्रमां श्रावेद्धा श्रवरा शब्दोना श्रयं. શુંલિ શાળાવ વિષ્ણે સતાનલ સાવાણ લાગલ પશ્ચા પા प्रज्ञा प्रति प्रश्नःग्न्दना तथा निमन्त्रणो संपदा दश्या । क्षानादिकती श्रद्धा करत्री, एम दस प्रकारे साधुनी सामाचारी छे.॥ ३ ॥ रूष्ट्यादिक जीबोतुं रक्षण करतो, चक्तबाळ समाचारि युक्त होय. ॥ र ॥ इज्ञा मिथ्या तथाकार, घ्यावश्यिकी नैपेधिकी च । नेयमिय साइमोश-निषि-रेषमिय खाइमोभ-निय मितः साद्रिम वापरनार नेयमियपाणोभ-नियमि मित आहारवाळी वाजी वीतार 多のでである कामने अनुगोदनार मिद्र, सापु अमे जैनयम प चारतं शरण करनार म्पष्य उसरणी– अरिहेत रिहियद्कहो-पापनी मुक्ताल मीयण-मारा तिसंगादि रथसंबह् ॥ छ ॥

=
= = = = = = = = = = = = = = = = = = = =
भीदि- थरशिकातीभोती पारतीय-तागरीवकाती पारतीय-शुर्भकाती पार्ट- मासाती देव-देव प्रदार - यहार - यहारिकाती - स्वारिकाती - स्वारिकाती - स्वारिकाती - स्वारिकाती - स्वारिकाती - स्वारिकाती - स्वारिकाती - स्वारिकाती - स्वारिकाती
मानी संदर्भ आयोग
भीदि-गरिग्रानीभोती  गर्गनीय-पुरमंत्रमती  गर्गनीय-पुरमंत्रमती  गद्भ-देव  भरा-गर्गा । ।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।
41/6-41   1710/19-   1710/19-   181-11-   1822.   29-42    1811-1911-   1811-1911-   1916-44 191-   1916-44 191   1916-41 191
1916   1916   1916   1917
कर कर्ना (ता) क्षितिकार क्षित्र कर्ना क्षित्र कर्ना कर्ना क्षित्र कर्ना कराज्य कर्ना कराज्य कर्ना कराज्य कर्ना कर
भीर-भीर्गी साम्तर्ग-साम्भू स्वाभी-साम्भू रिड-सिग्रोनी स्वपी-देशकानीभूदि प्राप्ताम् प्राप्तामे
भीर-भीर्र समार्ग-गणः नामार्ग-गणः विट-गिग्रोती स्पर्भ-देशव्या सप्त-गणः पप्त-गणः पप्त-गणः पप्त-गणः पप्त-गणः पप्त-गणः प्रार्थ-प्रत्ये सहि प्रार्थ-प्रत्ये सहि
भीतः । ।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
**************************************
# ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! ! !
TITE STATES OF THE STATES OF T
The same of the sa
# F
भागिक दीर्वक विकास मान्या कर्मा कराम कर्मा कराम कर्मा कराम कर्मा
hitier die mitter au hit eigen die hie rie (ci hie rie (ci hie rie (ci hie rie (ci rie rie rie rie (ci rie rie rie rie (ci rie rie rie rie (ci rie rie rie rie (ci rie rie rie rie rie rie rie rie rie rie
Trace a will be believe
and the contract and
I O B 'Factor's Samuel
and active slipiciti

व्यात्रोहन कृष्ट्यी

शीयांगदि रयसंबद्धः ॥ ए ॥

क्षान, व्यरान ( नोजन ), व्यतिचार, पृथ्वी विगेरे जीव समूद्तुं व्याराषन, प् ं | याणिरी-माण्हिने; माप्ति-सिष्द, गण्पपर, केक्ट्री, व्यवधिजिन, मतः पर्यवजिन, श्वतिजिन, साधु, देव (आतक) -जीपडंद्रिने, रसना पत्रशरण कानाशनाति, चार प्रथिच्यादि जीवकादीनां ( जीवराजीनां ) श्रुत जिन साधु समकं, देवस्य तथा आत्म साक्षिजिः ॥ ८ ॥ अरिहंत सिद्ध गणहर, केवली ओहिय मण श्री श्रमण धर्मरथना चित्रना ष्यघरा शब्दोना क्यथं. अहेत् सिंद्र गण्यर, कवति छावधि मन:पर्यंव जिनानां आरायनं पुनः सहस्राष्यष्टाद्य नवन्ति ॥ ३ ॥ हिन-भाषहि गरमाह-परिप्रा देवतह २ सुन-मुक्त साक्षिक खमाबुव, ॥ ४ ॥ प्रमाणे खटार हजार थाय हे ॥ ३ मियो-बन्नि ग्वडभा-संग्रत रहियो-रहित नेय राजावेर-राजायतो नधी यार शरण, रणेर-नयी हजनी भज्यं पर - भन्ति जांत्र - इजनान तथा . ... .क्रमंत्रप्र शागंदि रचसंबद्ध.

न्याएगति संदूति संतृत, पनि इन्डियोनुं संवरष्टिकरनार, समायुक्त सातु पति ्रषियो प्रण फरण, करड़े, कामबुं तथा व्यनुमोदबुं. बाने मन बिगोरे त्रण प्रदेखे मन, यचन व्यने? काप ते रीते त्रय जोग यायने. बाहारादि चार संज्ञाओ खते औत्र इंडियादिक पांच इंडिगो. जोगा, मण माईणिउ हवन्ति करणाई॥ आहारादयः संज्ञाश्यतसः श्रोमाणि इन्दियाणि पञ्च ॥ ए ॥ हरणानि श्रीण योगा, मनछादीनि त जबन्ति करणानि ॥ साथे जोनवाथी था रम्न यायहे.॥ १ ॥ आहाराई सन्ना, चउसोया शुक्राता स्वसंदर्भ ॥ १३ ॥

¥.

ग्रहभोषण-राष्ट्रियोज्यन अवभ-अब्रह्मच्य परिगाह-परिग्रह समाचारि ष्रयया न्न्नरथ ५ माना चित्रमां ष्रायेला ष्रपरा गृब्दोना ष्रार्थ. गायग-नाच ह. अवाध्याय पाणिबद्द-प्राणीनो यथ जईण-यत्न फरनार गुज-मन्ज 

नेय-स्तेय-चेत्री प्य-प्रत

ग्रा-त्युनि

यी निव्रुच षएद्या छने इग्राकार समाचारीने साचवता (नषता) एत्रा यक्षित्रोनुं कटपाष् बाद्यो. ॥१॥ जिनमा दचननी स्त्रुति करनार, थमे जिननी स्त्रुति करनारं इान सहित, प्राणीयघ (यात) मंगग-नोतं र उनमं १या-उरमं १६ 53इमा-र केइस पर्ड हाम युतानां, यतीनां जिनवचन जिन स्तुति कराएं ५ मा समाचारी रथ पहारती गायाना व्ययरा राज्जान पिट्रान्जगा-मते युन्तं से ममन्तरी आप्र-उजा-आपुर-5 धारी सम्पर्धा**र**िम्यम्मरीयो प्राणियय निवृत्ताना, मिहाकारं जणता ॥ १ 4-1 ॥ श्री सामाचारीस्थ । जणवर्गण नियसार्ग-नियमम् राखनार न्जाकार-रिजाधारम श्रान्तिसम्-श्रान्सि तद्दीनकारं-नद्दित्त નિભાદયં-નિસ્તાર क्रसम्-क्षनास(ने) जनाग-मजनारा - 31411-1431414 ज्तानं-मन्त्राचे 日かず世 414-14

# R ~ = ालेब-छेप विनानी ची न(पी) पांच नमस्कारहप सारथिवाळो, ज्ञानहप घोनाथी युक्त, एयो सामाचारीनो स्कूटरथ परम तेरङ्कं श्रष गंबिल-अविल स्पराक् गद्दाणी-चत्तेक्तनो द्वानी भिष्टख-मिसा (यो) नाण तुरंगम जुत्तो, नेई फुडो परम निवाण ॥ २॥ सामायारीइ रहो पंच, नमुक्कार साराहि नियुत्तो॥ द्व्य-ऱ्व्यवद मि-मेर निर्वाषां ॥ २ ॥ ६ ठा नियमरथना चित्रमां आनेला खघरा शब्दोना खर्थ. सामाचार्याः रथः पंच नमस्कार सारथि नियुक्तः ॥ प्तयजन्दीया (यो) मनि-यक्तारम् लेख्य भपा सिन्ध गहारो-आहारबाळे वगो-तप करनार क्रमुणो-नांइक ड़ान तुरंगम युक्तो, नयति स्फुटः परम **।** अवडू-अपार्ध क्र-अस 11-418 स्य करती भीते जनमार प्रहाखन-मारा फालपगाम धुमायच-सारा भात्रपणाने 'गाहार-अच्य आहारजद रिष्यं च-सारा द्रव्यपणानो खित्तच-साराक्षेत्रपणानो णुक्तासो−भइंकार रहित ज्ञ-मायाना पय-मचनना निर्वाष प्रत्ये सङ् जायने. ॥ १ ॥ कोपी गावनार रिटीजो-संस्रीननायात्रो. सं सिमपासणम्यो-देशयी अ-तपना मनबाळो नशनना मनबाळो विरव-अविरति जिसर्थ – अनदान ण-मनबाळा 11-12

द्यांचागादि रचसंबद्धः ॥ १४ ॥

3 मह्द्वण-माद्वि मह-भय 計畫 ६ ग नियमस्य यहात्ती गायाता श्रपरा सन्दोना श्रर्थ जिश्तानश्चन श्रमणः, मनः संवीनः सुडन्य त्यातुत्कर्षः । अरुपासरोमोद्दरिकः, सिक्ष्य तपाः कीरमपि वर्नेयेत् ॥ १ ॥ कडारं-तळावेत्र पट-गोज गोगास्मि-तहेल्स 理行品 ॥ औ नियमस्य ॥ ६ ॥ 事事 अ विरयाण सणमणा 华北 作世 世上日 ॥ क्रमंत्रषत्र शालंद्यीः

38 हिंत, शक्याशास्त्री अनोत्री करनार, सेक्यथी ( एक दाषानी संख्यानने ) तप करनार साधु रूप, दर्षि, पी, तेल, गाळ, तळेलां पकवान, मय, मांस, माखष, मथ था दस बिगई (बि-ऋति ) ने ठोती रे. ॥ र ॥ न्नीरत ( उपनातादि यिना ) बूत्जो रहे, मनवने सन्तीन, सारा ऊज्यपणाना श्रहंकारथी माण-मान-अहंफार दसहा ॥ २ ॥ ण मा निंदारयना चित्रमां आवेखी गायाओना अघरा शब्दोना अर्थ. निवज्ञ कोह-कोष मांसं मक्तणं वर्जयेत, मध्वपि वर्जयेतु जवे इज्ञधा ॥ घ ॥ ामोऽवगाहिम मद्यपि वर्जम् ॥ तिछं, गुडओ गाहि मज्ज । भसज-भाहार फास-स्पर्ध महमविवज्ञे कुपने पत्त पर्जी दे ( जाय निष्ट ) ॥ १ ॥ कीरं दधि घृतं तेंखं, ग् नारय-नारकी (ना) निरिय-निर्धेच (ना) मंसं मरुखणवज्जे. लीरं दहिं घयं रिवसेणं-मोर्ता बन्नयी .इम<del>्रोक्</del>र शागंद्यहे.

छोप-लोग भोग-भोग भोग-भोग

माया-क्ष्पंड

ग्नाप-संद्यापडे

भय-भयनी

(स-देव (मा)

13 my-Fra तजा-मंत्रा शन्दोना श्रम रामे-राम् तम् FFF-FF. म्युनि-माय ं, खद्यानि क्रमेण तिष्ठन्त्रे FE-121 14-17 उ मा निदारय वहारनी कथं-वास्तु 917-917 वेद्मया वर्षं पातं, महिवश्नेन मनसा <u>a</u>. 7

वेयाययक्तरो-नैयावम करनार ग्रद्धम्मकशी-सारो धर्म कहेनार मोएना वत्तराी, देवादि चार ज्ञयोमां, शब्दादि पांच विषयोथी खने छश्तादि दस संज्ञा-5 मुत्रधुपेदी-सारी अनुपेक्षा मादु, राग, द्रेप ए प्रणः, मन, बचन, काया, ए प्रणः, चार गति, पांच विषयो छाने संक्रा ठे. तेयी रहित षड् हे छोको यतिषमेंनी छासेवना करो. ॥ र ॥ ufar-enfer mir गंचविसय दससना, जह धम्मासेवणा लोया॥ २॥ मोहे रागे दोसे, मण वयण तणाणि गइ चउकं च॥ सामान-नास o मा तपरयना चित्रमां खावेसी गायाखोना खघरा शब्दोना खर्थ. 114-116 वरे शक्तिमाद्या में ने वाप मनयी कर्युं हे, ते वापने निंड हुं. ॥ र ॥ ग्वांचणीओ-सारी वाचना धनरियधी-सार्व पराप्रसीन ग्रयुन्त्रणीशो-सारो यूक्त्या भापनार मुक्त-शुर्फल त्रम्पष्टसाइ-समाप्तष्पाये उन्नाह-उपि (मा). नेयक्तियो-पहित गट्ट-अमिध्यान 6द्र−रीक्ष्णा**न** ur-pah सम्पर्र-सम्पक्त्वनी रुषी-नाणर्ध-ग्राननी रुचीवाळी ग्ज-चारित्र (मी) सन्बर्गर (जा) हरू-हचीवाळी ध छ। ॥ उड़मंत्रक हो।।। १०॥

.

202

स्वस्यक्ति देवति हैं निर्मातिक सुरामित ॥

क्षासम्बद्ध , देवविषेकी ज्यात्रांदि प्यातमी रष्टिस, सुपाणनिक, ( सारी वाचना व्यापनार, )

ग्राती मेश करनार एमें कोड़ ( वित ) ब्याझोनिने मुद्ध याप है. ॥ १ ॥

ार बेक्सक्रुक्करा, क्षणमि कालोब्य कोडिषे ॥ १ ॥

डिक्कमणड. मीसेणड विवेग डस्सग्गा ॥

आत्रोइउं प

H os H

वांडेय प

कोई छेया मूलाय, तहाण

. \$21477

Flitizita

ष्टाडोइने प्रतिक्रमण करवायी, मिश्रणयी, विवेकयी, उत्सर्गयी, तपमां बुद्धि राखवायी

नेरपी, मूळपी, थनवस्यिनपणायी, थने पारांचितयी कोइ घुद्ध थाय हे. ॥ १॥

सीप ठेदात् मृद्यास्त्र, तथा नवस्थित स्तथा पारांचित:॥ यु ॥ आखोच्य यतिक्रमणतः, मिश्रण वियेकोरसर्गेष्यः तपोमनिः ॥

परदेश-गुलने महे

माणी-मानी मायी-इत्यहो क्षेत्र -क्षेत्र

गायायांना ययता शब्दोना खर्य.

ए मा संसारत्यना चित्रमां छायेष्ट्री ग the-ager fra जो से-जीव

मिश्म-कार्निय

1	==	=	=	_	_		_	_	==:	_	=	_	_	_	_					_			
1	ଦ	0	m	2	3	),re	C	7	300	C	4	)JU	ź	<u>ي</u>	×	œ.	7	که دو	2	<b>3</b> ×	(C)	9	(C)
17, 0 11 1	े सम्बद्धमाइ-सम्पन्नमहारे ब-	1	mit-mit mes		वाउद-वार्ष	umfind-ming my 3.	The first of the second of the	1447	निष्पस्-कारन्	Terra-feran	mé-ana		= -	21-2:11	दंदोछि-समुराय	युगर-युगरिने	- भानार-मानग्रह	महं-मन	,		सहस्र	2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	मइ≅१ः
	中北十十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十	क्रम्स-क्रम, पाप	सन्दर्ग-चरी-सम्	Caralta and	71 75 75	दाह-दाव	डिस-स्थिति	वीन्य-वीय	111-111	. बहुपय-युगा स्यानकी मृत्ये	दंशील-समझाय	merelar aar erestar en	- H- H- M	नाह-न्याय	रिय-स्पिति	तिव्य-तित्र	Trug-1171/ Eurar ush	मी-वे	॥ श्री संसारम्य ॥ ॥ ॥		कोंहों सोइंदियस्स सहहेतं॥		ततार पारम्भमइ॥१॥
	(1) - 112. 114. (4)	मिर्मिय-वेशिय (ना)	चर्डारिय-चीरिद्रियना	गंसिरिय-पंतिरियक्त	11414-1414	4 414 - 44141	_ <del>11</del> 1-11	संसारं-संसारने	परिकाम -ममेडे	मबाहबी-मन अटबी	4-4	ए मा संसारखनी बहारती ग		1	ना एण१-न एण	मनमदनी-मन अदनी (मे)	क्रमस-क्ष्यं, पाव	बर्ग-मग्रह	॥ श्री संसर		पुरसजावा, का	4 4 6 6 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5	नुवाय जाय, ता
		। वामहीनाः	で を	Car-art-re	10 m Arm	2014-12-411	बाद-बाबान	अाउ-अपकाय (ना)	वेव-ममिना, वेवकांयना	बाउ-बाउकायना	क्यास्सार्-क्नम्पनि (ना)	E 20	वरिति-नार्विति	100	20KH - 20K	नान-नान	मार्ग-काम	गोरियसा-योग्द्रियना			उड़ादास प	T WILL TE	<u>a</u>
		2	2cC	2	3	300	2	~	r(	5	9	æ	_	<u>ۍ</u>	œ	1	<u>س</u>	<u></u>	9	C	<u>\</u>	314	20

ां इन्डियोना सुखने माटे पृथियी विगेरेना ऊर्ध्वदिशि पुरुषजीयः कौघी श्रोवेन्दियस्य सुखहेतुम् ॥ यो हन्ति पथ्वी जीवान् , स संसारं परि-न्नाम्यति । नतार भवअहवाः कम्म समग्ग शहानाहि रबसवर्षः ॥ ३३ ॥

23

दींधे ( खांची ) स्थिति, तित्र रस ने बहुस्थान त्रमण, डुःखनो मंसारं जवाटवीं, कटमपवर्भ दीर्घ स्थिति भावारि 1 संसार जवाटवी, पापनो वर्ग दु:खंड्रह्म

नमूह, सुगति, नावशत्रुथी निस्तार थने मोक्ष्मुख बाटला पदार्थोमांथी प्रबोक्त जीव खागळना

) ने मेळने ठे खने पाठळना त्रण् (पदार्थ) ने मेळवतो नथी. ॥ १ ॥

। गाषाष्ट्रोना खवरा शब्दोना खर्ष.

१० मा धर्मरथना चित्रमां ष्टावेसी

નારિ-નારી

अधुत्तरपा-तपेर

विषशः-भाषेत्

टाण-दान

तवं--तवने

(मित्रमो-सत्य युक्त त्यान सहित स्मिन्नो-ग्रन्ति सहित पना मिलयमे निरंक मन्त्राक्ष्म

हेत.तपथी युक्त, संयमवाळो. भासाद-भाषा अघरा शब्दोना अर्थ. ्धरश्च ) ॥ य ॥ ऊर्ध्वदिसि नारीजीयो, दानंवितरति विश्रोतविषयमनाः ॥ ावज्ञीवमपि ॥ १ उदेह-उपेक्षा ११ मा संयमस्थना चित्रमां ष्टावेली पृथिवी जीवान् रहन्, समहर्वा. तस्यमः सत्ययतः の万里 शन्तिकमः । रक्ष्ण करनार, ज्यंबादशामाँ पांच इन्डीयना । खंतिखमा ।। ६८ ॥ .कृत्रसंत्रष्टः हो।[ग्रीह

7 R Z II

समानती सहित ग्रन्त थुक, स्थाकार नामनी सियाद-इन्हें हेपतो ॥ १॥ संत्रम-पारित्र 44-44 E त्रीयांक्ष्य १ त्यसंबद्धः ॥ श्रत्

R/ = क्राजीवृत्ति नारीजीयो, वानंवित्तरति विश्रोतविषयमनाः ॥ वीच इन्डीयना निवययी पिरक्त, क्मामां । जूषिती जीयान रचन,

रक्ष करतार, अर्थिवृद्यामां नारीनो जीय दान व्यापे हे. । खंतिखमो

तबज्ञाता ॥ समात्तणाँउ : न जन सम्बज्जा समह्या द्यान्तिकमः र

सहित, मुक्तिसहित तपथी युक्त, संपमवाळो धरश्च ) ॥ य ॥ निष्परिवही छने ब्रह्मचारी.॥ १ ॥ सहित, घाजेब ससंयमः सत्ययुतः ३ क्तमावने युक्त, मार्दव योधनार, शाैचयुक्त, प्राजाक-प्राजा समितिन

मिक्र-ममार्थन उदेह-उदेश

मासार-भाग ।

११ मा संपमरयना चित्रमां आवेखी गायाओंना अघरा शब्दोंना अर्थ.

रिमा-हिमाने

तिमा-हिमा को

दीखांगाहि रक्तंत्रह.

स्गिकार नामनी समाचाती महित्र गन्धे <del>ग</del>ार यतः स्नोक्त , दचनो ॥ १ ॥ F संत्रम-पारित्र हिंसड़ न सर्य माम-माम 44-44

<b>.</b>					ე-v@ = 2-v@
3	त्र मा गुना	वेश्यात्रकरपना पित्रमा ह	१९ मा मुन्धेश्यांत्रकत्यना (नेत्रमां खावता गायानां खपरा शब्दानां थ्यथः	ाब्दाना थ्ययः	2
	ケーケー	। मामार्क्षि-मार्गान	भीगरुई-भीनरुचि	वार्वा-वार्वा	<u>ښ</u>
	A1-34)	सरासम्-सयीयाम	अभिगम-अभिगम	जीय-जीत, महाचर्य	·C
	वेग-देख	मार-सार	विष्यार-विस्तार	यग्रारि-ज्यनहारमाळी	<u></u>
_	434-43	केरंप-वेद्द	क्तिएय-क्रिया	क्षेत्रलयारि-केषळप्रानने पा-	D-1
2	100	रक्ष्य-धायक	संक्षेय-संक्षेप	रण करनारो	6
n	जब क्यो-जयक्रम	निसमां-निसमें	यम्म-पर्म	मणपञ्जाय-मनः पर्यं	ৈ
36	निकलंगी-निसेपी	स-रियो	आगमपारि-आनमने पार्	भाह-अवार	3ne(
ים:	अलुगयो-अनुगम	परंता-पारण करती	करनारने	पर-पारण करतान स्तुत्रमान्त्रीक	2
e e	नम् नय	उबस्स-अपदेश	नमंसामि-नमस्कार करुंछं	नुहुन नुहुन	<b></b>
i)h	जयमिय-जयज्ञमिक	अव्य-भाग्ना	गुअगणपारि-धुत गणपरने	म्य-मय	··C
i t	संपर्धा-सम्क्रितवाटी	मुच-मुत्र	जाणायारि-याम्रा यास्नि	पुरुवधरं-पूर्वधर	مرد
بلار	१२ मा श	जिसेश्यात्रिकरयना यहार	११ मा धुमखेर्यात्रिकरयना यहारनी गायाजेना द्वटा शब्दोना झर्थ.	ना क्षयं.	اندوع
Ell;	원-1·	परंत्री-पारण करती	सासिभिअ-सास्त्रादन	मसकर-मञ्जन्ती	<u>ئ</u>
; 3	वेउटेस-वेत्री सेरपादाळ	जागमयारि-जागमना या-	पंचित्रं-पांच मकारनं	बीयरुड-घीजरुची	9
9	पणाता-मन्बहे	रण करनारने	म-मळी	अभिगय-अभिगयहची	×G
ኆ	रत्त्यो-उपक्रम	नमंसामि-नमस्कार फरुंडु	सम्मर्ग-सम्पित	विच्छारहर-विस्तारहची	
<u> </u>	उरत्तिषय-ज्यातिष्ट प्रा	स्मधं-सायक	पत्रसं-रुस्ते	क्तिया-क्रियाक्की	Jn.
J. 1	मंबको-मिक्त्रकाची	त्वश्रोवत्तियं-तायोपश्रमिक	मीयरामेहि-यिमरागोप्	संखेष-संक्षेषक्षी	E
,	)	ومساجيد	उचयतारहं-उपदेशक्षी	पम्मदर्-पर्धन्ती	

व दक नद्भपत्रच च होइ ववहारो ॥ <u>≅</u> ₹ 2 ं चेउ दस, दस नव पुधि पुढमध्य ज्ञायिक द्यायोपरामिकं, वेदकोपरामिकं च सासनीषुं ॥ आगम श्रुताऽऽज्ञा घारणा, च जितश्र जवति डयबद्वारः |यरुडमच . पीप जातते सम्पक्त मन्त्री हे से ह्या प्रकारे र पर्नापिर्धं च सूत्रं, प्रकृष्तं वीतरागेः ॥ घृ ॥ जीयः होष हे.गा ३॥ भाणरुई सुत्त पदेशरुचिः आज्ञारुचिः सुत्र धारणा य. : , उपदेराहची, स्त्रहची, यीजहची, दरा प्रकारनी रची जीमने वस्तार हिनः निमिक धने सारमदन. ॥ २ ॥ अचि ः अनिगम् । आगमस् 1 de Secrit Philips

JIEZII GO	<del>-</del>	Gru	Dod		-0.73	220	Src	One.
आनमने परनार, धुतगुणने परनार, आहापरानार, पारणा परनार, महानर्थं परनार, घवनार। जीतत्व्यवदार परनार, केनळहान परनार, मनःपर्धगृङ्गानगळो छापिक्षानगळो चोद पूर्नेगर हराधूर्वेषर छने नव पूर्वेषर टे. ध	(पाठांतर) आगम अतागुणाऽऽज्ञाधारणा ब्रह्मा च केयलयारी ॥ मनःपर्यवार्यायारी, चतुर्दश दश नव पूर्वभारिणाम् ॥ ४ ॥	१३ मा अगुन्तेह्यात्रिक्त्यना चित्रमां व्यायेषी गायाना व्यपा ग्रन्तोना व्ययं.	बो-जे   देस-देव   बीप-जीरोजे   बाजन-पाजेनगाजा   किय-क्रण राग-राज राजे।	वाळो भागत-भगियति लाहिज्यति तिहिज्यानि विद्यान-विवश्चित स्वित्य-स्वयुक्ति	सिप्रहोक वेदामि-वार्देक मिनवेषिक महत्र-सार्देक		हारनी गायाडीना बुटा शब	ा। किर्एटेस-कुम्पटेरपाबाळा बन्बळी कुर्गिकीए-पुर्धाकार जीरोने सह-सायुने पनसा-मनबंदे अभिगर-अभिग्रीक स्वत्ने सह-तायुने स्वास-मनबंदे अभिगर-अभिग्रीक स्वत्ने स्वास्

=	The March March of	
	ते हैं हैं । श्री अशुभवेश्यविक स्व ॥ १३ ॥ हैं । । श्री अशुभवेश्यविक स्व ॥ १३ ॥ हैं । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	्रे विश्व क्षेत्र क्ष
at and the fact of the same sections	The state of the s	9-

मित्यात्व यांच जानतु दांय हे. (१) छत्तियद्विक, (२) यनित्राह्विक, (३) खित्रिनियेशिक ट्यानियड्कि मनानियडिके, तवाठानिनिवेशिक चैव ॥ मांद्रिक मनासोंगं, मिय्यालं प्यथा जबति ॥ ए ॥ ) मांत्रिक छने (u) जनात्रांत. n र n

कीहरा, जनका, रेलका तमें देनत सत्रता. या नार निकाम प्रतीया प्रमीगी , बचा त्यनः साम्म् मन् ॥ ३ ॥ साम्या नदा च गत्रकृता । 4 EU VERY Barrel Gazarer

35.45

HATTLE HATTER जीराने जीतिमेतिक यात्रा मानुत्र न-मानुतिक पात्रम ग्ता ग्राम्ता मार् ing del tratt fertit

1"TT 1" - T ( 111 ) [ 11 - 41 -

おんぱんことがなるないかともつか

かなが

200

मुख्यम् ध्यस्य

\*\*\*\* \*\*\*\*\* ##

321 ספיווייו-שיייות יינייוני गसाह-असायुने किंपे व्याविद्या-योच यक्षास्त्र भनीवे-भनीयने कि अद्येपे-अद्युद्यने दिपे सुरां-सुदाने नीवे-जीवने विषे મંકિત્રિ<u>થા</u>−સંક્રિય भिष्या-क्रद्रेश ये यजीरं-अनीयने ग्रुपे-गुप्रने क्लि मायणा-भावना श्रमग्रा–उन्मार अगुरां−अग्रुपने संज्ञम∽यारिष गरं-मायुने जीवं-जीवने १४ दितीय प्रककररथना वहारनी गाथाठीना ष्यपरा शब्दोना खर्थ. 101-H1 करीने विनयादिक्यी विनय मनी यायतमां संरक्षण (मृछी) न्हे मरीने उपयात याय ते. न करे ते. ाग्नरिय-भाग्नरिक भाष्त्रभ भावन मम्मे-उन्मानी जि हंरप-हंदर्भ भावना 电话语言 바라-비타 타 | प्रम्न-अयम् गर्न-संग्राने 4411-4 100 परिहरणो बंद्याय-अफल्पनीक उपकरणनी सेवाबडे उप-गत थाय हे. थाय है. चोवयायं-समितिना भ करीने डपमात थाय ते यात थाय हे. उग्गमदोसं--उद्गम योपने, शक्तारथी दोप खाने ह ाजोबद्याय-ममाद्यी रिटरेड-परितरे से जणयं-भरनारुं सर्प-संग्राम म-प्रभा नगरथी (पेतानाथी) दोष पाभगाय-उत्पादना दोप-अमे से,सगासंपंपीना का-एग्यी उत्पन्न ययो ते होष. -गवेषण करवी हे रिकम्मेण-वस्त्र पात्राद्रि ग-गरया मदारवायदे बपदात से परिकमें उपयात. तपास फरवी से. ाषुओ-मनुष्य मणसा-मनब्दे 4-44

il 55 il 52 tritife varing. Il 32 il

11 33 11 Ē भगार-अगार त्रीयाग-नी होने तया अङ्गमदोव प्राह्म ॥ श्री हीतीय प्रकरस्थ ॥ १४ । परिहरति ॥ क्रोधमपि जिल्बा धर्माध्येपि मजुजः मनसा, ारिक्ष उपयात **उटगम दोपम धर्मे.** धर्म मनवर्ग क्राथने थाने ग्मान-उद्गाम होष समा सं-ण कारणयी आहारमा टीण भीना, कारणपी सत्पन ष्पाय-उत्पादन दोग, ग

त्रीचागाहि स्वसंबद्धः ॥ इत्र ॥

संकिलिङा, पंचविद्या भावणा भणिया ॥ २॥ हिंदण देवाकिश्विसि, अभिओग आसुरिय सम्मोहा कन्दर्प देवकिट्विषा, नियोगा आंस्ररिक सम्मोहा ।

रपातु संक्लिष्टा, पश्चविधा जावना जाषाता ॥ २ ॥

रिहरण५,नाण६,दंसण७,चरित८,आंचेयत्त९,संरब्खा॥३॥ (१) कंदपै, (१) देवकिट्विश, (३) अनियोग, (४) आसुरिक, (५) सम्मोहनावना था पांच द्संसंजमांवघाया, उग्गम १, उप्पाय २, णेस ३, परिकम्मे ८,॥

प्रकारनी क्रिष्ट नावना कहेली छे.॥ २ ॥

ग्रीयांगादि रथसंबह्न. ॥

द्श संयमोषघाता, ठद्गमो त्यादैपाषाः परिकर्मः ॥

परिहरण ) ज्ञान दर्शन, चारित्राऽप्रियत्व संरक्षाः ॥ ३ ॥

दस संपमना उपवातक हे. (१) जद्गम, (१) जत्पाद, (३) पपणा (४) परिकर्म, (५) परिष्रण,

| (६) द्वान. (१) ददीत. (११) काफिन (११) व्यक्ति

अधम्मा मम्पर्जावा, असाहु असुत् पचाववराया ॥ किलिठ जीवाण नायवं ॥ ४॥

**छाधमों मार्गजीया, छासाधुर सूत्रं पञ्च**विपरीताः ॥

मिथ्यात्वं द्यतेतं, क्विट्रजीयानां क्रातब्पम् ॥ ४ ॥

थमेमां छाषमे संहाते, मार्गमां छन्मार्ग संहाते, छजीयमां जीव संहाते, सानुमां घ्रताबु (पाठांतर) धर्मध्यमे स्तुमागे, उन्मार्गो जीवेजीय योष्ट्यः ॥ सायुन सायुः सूत्रम सूत्रं चैय परिहरति ॥ ४ ॥ संकाने ने सुत्रमां ष्यसूत्र संकाने परिद्रे छे. ॥ ४ ॥

१५ इर्गापिकारयना चित्रमां व्यानेवी गावाब्योता ब्यवरा शब्दोना ब्यर्य. गुरुति-गुरुती रमणा-दोष रहित भाहार छेनो हे. भंडमच-पात्रा तया मात्रक्त

पा**पा-**-कष्ट्यं माण-मानयी

॥ ३६॥ .इसंबर शागंधीइ

पुरायोजाय

मस्से रि-ने याजोरे दे होप है। निंचही५अजीवसहित एवं१० अभिहया प्रमुख दस भेद॥२॥ दिवात्रीय-विशेष मकारे हु | सदाबन्ध-पंगा लोहना बार् बदुनगरं-यगा लोह भेगां मगुषा-मन्यक स्तरे आ-क्ती सेरे हे. हु उपरामवाळा मनवने फ्रीपथी पिमुक्त छने इयौदि पांच सिमितिवाळी यइने माराथी त्रासोगे ने आओरे ने छन्-जन, (छान्र) वेइदीर तेइदीर चउरिंदी ।।। १६ घाछोचना रवना चित्रमां घायेखी गायाना घ्रघरा शब्दोना घर्य. पृषिद्यी कायिक जीया, अनिद्तास्तान् एमयामि ॥ १ ॥ ٠١ جاري अजुनाई-अनुमाने हरी सागर-नादर, मोटक → 大学大学大学大学大学 त्त्रं-रचन अपश्चम घर्षा मनता, गानान्यः ナーシャ हणाएता प्रिविकायना जीगेने खमाबु हुं.॥ १॥ मिमितिभ योग३ एकेंदी१ नेता-जोप निमे । मागा-क्यडने भाग्नोपमा-मान्नोपना ने. रिज्ञा-निर्मित गरन्ती. तिवासी से अने पन البينا-(اجد جيما गास-म्यास्मि 3 Par 2 - 21 Ala क्य-क्युं हे A-BAN tipali-til

361 पहुत्रमपं-यम्मिमा आलो लोपन हे ने गुन्दे मालीये ते भवयत-अगोताय पासे ड . पग मगर न माओ मणसा कोहाइ विजिउं सहं॥ पृषिवी जीवान् रक्तन्, आकम्पते तद् विवर्जधामि ॥ १ ॥ १६ मा ष्राखोचनारथनी वहारनी गाथाजैना व्रटा शब्दोना ष्रर्थं. आवोचना परिएतो, मनसा ऋोषादि वर्जितः शब्दं ॥ सराउले-श्रद्धांकुलं, बतायळे न-जानुमोनुं पग पगदाण पिर-पादरजने आलोरे ते नीव-योजाए दीठेले पाप १मं-मुस्मनेज आलोपे ते भालोरे ते. ॥ श्री छालोचनारथ ॥ १६ ॥ आकंपड २ मोक्षा-भगद्ध आहारवाणी भयुमाणात्ता-यणा अपराधे ोड़ आलोयबं ते. प गुष्ने मिति देखाडी आलोपे ते गेवज्जेमि-वर्जु छं ख्बता आलायणपारणञा र संपान मुजे छे, स्पेछे रिजयं निव्यक्तिमधाळ गत्नोयका-आस्नोपना क्षाड-क्षायाहिक गुरा - मन्य व १) जह ॥ .क्रमंत्रक र हो।एवंहा

आधोचनाना परिषामगळो, मनवने ऋोधादि अने शब्दादि पांच विषयोषी रहित पृथिशी

पेगेरेना जीयोनुं रक्ष्य करतो जे ख्याक्षे

1 3 G 11	-	_				=-																	
<u> </u>	140 C	<u>-</u>	43	<u>ু</u>	C	7	Ju:	<u>e</u>	_	של	ے	<u>ം</u>			<u>) u</u>	$\overline{z}$	٠٠٠	ح.	<u>ം</u>				
। सुहुमं वाः॥	=		ाटदोना टार्थ.	[ मन-मनमे	我一章 中智	अन्नन-साद्यायुं	गमर्ग-मार्ग सहित	सुनि-नियोमना	वय-वय	संतम-चारित्र	सम-सन्	सोय-धीन	अस्तिषा-स्विम रहिन	∫ यंभ-प्राप्तमर्थ	। खर्ष.	। समा-पाच्या	खंदितमा-सपाप क्रीने च-	म एवा					
नं दिइं नायरं व	ग्त तस्सीवे॥	- Lack	खी मायाद्योना द्यचरा इ	जस्म-मग्र	द्रा ग्रीता भंगने गांठे ते	अरु नि-मणगमे	महामून्छ-यहामुख	चरमंच-उत्रमस		fair-fair	सर्ह-मंद्रम्	मर्था-मर्था	संनि-धमा	जुमा-युक्त	रठ मा रागधिकरथनी बहारती गायाजेना ब्रटा शब्दना खर्थ.	विसर्गमि-विषयम्	चिनावरुषं-पिनावस्थाने	न-मह					
आकंपइता अणुमाणइता जं दिइं गायरं य सुहुमं वा ॥	छित्र सहाउछं बहु, जण अव्यत्त तस्सेवि॥		गत्रिक्त्यना चित्रमां छा	१७ मा रागत्रिक्त्यना चित्रमां खावेखी गायात्रोना छचरा ज्ञन्नोना छर्य.	गत्रिक्त्यना चित्रमां व्या	गत्रिक्त्यना चित्रमां व्यां	गत्रिक्त्यना चित्रमां ब्यां	विसयपि-निययने निये	रत-रा	राग-रामना	गंप-गंप	प्तास-स्पर्ध	निमा- विका	जब्ध्यं-अवस्थाने	ण-नगी	गया-वाच्यां	दंशण-द्द्यीन	नीताता-नित्यात	॥ रागत्रिकरवनी यहारन	यणस-मनन्द्रे	宝宝~~	10-2:1	
			१७ मा साम	<b>一 ならっち</b>	क्षापराग-निषय भोगना रा-	- tal	रिमा-रहित	नेर-स्नेह	लिंह-चीर	स्व-स्व	मगुष्यु-मनुष्योम्	निरिष्यु-निर्वेचोमी	नरव्यु-नरक्ते निर्	गर-बन्दना	(3 H	中-中	काषराग-काम रागम्डे	रिमा-रित-यगरना					
	ي سو	٧.	G)ne	e Se	ار سوت	નવા સર્લ	יי מנו	ا ا د	C.	ale ale	)   	<u>ه</u> کړ	<u>ښ</u>	æ	٩	×Đ	줐	)v(C	إسمده				
			u	111.6	í.		~~		J~	=							_						

유 = मनवरे चिन्तावस्थाने नथी मुणी वन्दे॥ १॥ उम्माय-उमाद पाणड-याणनो चितेइ दर्ठामच्छइ, दीहं नीससइ तह जरे दाहे ॥ र्थान्ति युतान् तान् मुनीन् वन्दे ॥ १ ॥ मुच्डा-मृड्डो पर्ण-मर्ज सद्द्रिंग्यंभि देवेसु शब्द विषये ॥ जे काम रागथी रहित, देशादि जवमां, शब्दादि विषयोमां, ॥ श्री रागत्रिकरथ ॥ १७ ॥ दर्धि-दाह याय हरू-नोपाने. मिन्या-इच्छे | जरे-तान आवे भरा-आहारनी अरोश-अरुची पाम्या तेवा क्षमावाळा सुनिजेने अनिवंडुडुं ॥ १ ॥ रहिता, मनसा नीसपट-निसासो से चिन्तावस्थां न गता चिन्ताऽवध्यं ण गया elt - 4)11 ता-तुमम राहेआ जे कामराग शासामि स्वसंबद्धः ॥ ४० ॥

मेत् अराअम मच्छा. उम्मायं पाउणाह मुग्णं ॥ २ ॥

हैं (के) जिल्ले विमे	Bull Bull Bull Bull Bull Bull Bull
निसारोची मूठी, उन्मादः प्राप्त (संदेशित त्या प्यरा दाघः ॥ बामनी रस व्यवस्था कहे हे. (१) चितको (१) मिएए।। २ ॥ संदेश, (१०) मएए; थादस बागे, (६) थाहरत्ती व्यक्ती, (३) मुठी, (०) उनार, (०) प्राप्त कामावस्था है। १ ॥	प्रपर्स सम्बन्धाः खर्यः, संग्रीस-गाः धर्यः, सम्बन्धाः व्यकः, सम्बन्धाः व्यकः, सम्बन्धाः सम्बन्य
जेकारोची मूठी, उन्मादः त्राण (संदेहः ) मरणे ॥ दाघः ॥ स्म थनस्या कहे डे. (१) जित्तजुं (१) जोमा छन्ने (१) दोष ॥ २ ॥ (५) दाह् यनो, (६) थाहारती थाइनी, (३) जोमा छन्ने (३) दोष निमात हे एः थादस कामानस्या डे ॥ २ ॥	दर अभिद्यी गायाओवा क्षप्ता प्रमान्त्रमुक्ता प्रांते ते स्योगे-न्त्रमुक्ता प्रांते ते स्रोप्त-नंत्रमुक्ता प्रांते ते स्योगे-न्त्रमुक्ता प्रमान क्ष्मिन्द्रमुक्ता व्याव्या प्रमान-क्षमुक्ता विकास वि
ंनितारेची मुठी, जमादः प्राप्त विदे नामनी दस घतरथा कहे हे. (१) चितव्हे संदेदः (१०) मए: घादस कामादरथा है।	रेण क्षानवर्दान वास्त्रिरकानी व्यंत्र व्योवकी गायाकोना व्यंत्र स्वित्रोंना व्यंत्रे स्वान्त्र स्वान्त्य स्वान्त्र स्वान्त्य स्वान्त्र स्वान्य स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्व
C3-C3-C	aco-co-co-co-co-co-co-co-co-co-co-co-co-c
" # 11,	Subri Amielia

# KR II गरमामार्ग-सारसारमार, एम्द्रम क्तिमारे-निमर्ज, विचार (३) भारा-पार्या भारति जे नाणंचिअ मणसा, पिंडध्यज्झाण पढमवयछीणा। ए मा श्रामश्रांन जातित्राचना पित्र पहारती गापाठीना बुटा शब्दातो थये.॥ नंक्तिय-शंकित माग्ररे-माग्रर पत्रोते-मृत्रो 4-47 मपे-मय खंतिखमं साहणं वंदे ॥ १ ॥ दुर्पं च परिहरतः झान्ति क्षमान् साधून् बन्दे ॥ १ ॥ ये ज्ञानमेव मनसा, पिनस्यध्यान प्रथमत्रतद्यीनः ॥ मणामोग-त्रत्राणरणे: अनामोगे ॥ श्री ज्ञानद्येन चारित्रस्य ॥ १७ ॥ नग्राम-नगर्म प्तान 14-443 Mark-hi ामा य-मपाड न-पर्य निगर्न- हत्याय शानि युक الرائع والما والما पाएनं-सामुश्रोने 14-4114 (?) के विष-युन्ध १३ प्यं-पर्म -ナンナー दप् च परिहरतो मानक स्तान CATH-THE (CH) जिर्म-विक् (4-27(E) الفاساداع なかっち 124-54 जुन्नांकर स्थानंदर.

जेरी हानी है यने मनवने पिंतरयादि चार प्यान यने प्रयम प्रतमां छीन है, वर्षनो जेषे

लाल करों ने ष्मा क्मा राखवाने गमयं तामूने कु बांडुने ॥१॥

# £R = पिंग्स्यष्यान, पद्स्यष्यान, रुपस्यष्यान, रुपातित ष्यानमां बीन यएक्षो जीव कर्मेश्य करेटे.॥२॥ दपै, प्रमाद, थनात्रोग, थासुर, वारंतार थावतेन, शंकाबाद्धे सहसाकार, जय, प्रदोष धाने = Telest Pictor कम्मख्यं कुणइ तं झाणं ॥ २॥ रुशातीय-रुपातीन दिस्यं ध्यानं रूपस्यध्यान माद्यीनः॥ १ए मा पञ्चरकाषायमी चित्रमी गायाठीना हुटा शब्दोना ध्यष्टे. आसरे आवहंस अ कमें छयं करोति ध्यानं ॥ छ ॥ दर्पे प्रमादाऽना जोगा, सुरे ज्यारातिषु च पर्यं-पर्वत झान-ध्यान पिंक्स्थध्यान मेव, रूपातीतं च युनः, रुंगतीतं च पुणो, सहसागारो भए, ग देज पमायाणा ॥ ५४ ॥ क्रमंत्रक होगगंद्धीह

2 RR = संकेषविषं-मंकेन यह मष्जुं गेरवसेसं-समस्त, निरवशेष अजागाई-जागार स्रुत पिंडध्यज्ञाण सामाइयनयलीणो दसरा-दक्ष मकारे( २) परिमाण-परिमाण रिमाज-परिमाज भस्।इषं~अधोतीत्र किंभ-संकेतवाळ भद्राश्यं-अधीतीन π**દ'**−π(છ गायाजेना ष्यचरा शब्दोना ष्यर्थ. अगागर-भनागत, भविष्यम् सागार-भागार सहित ने मिन्नोट मि नागार-भागार महित विष-भावे काीने 13 हें ने - अतिक्रतिने ॥ श्री पचकाणुरय ॥ १ए ॥ निस्सामि-म्रीय करिस्सामि-फरोज्ज ने भट्टि-नियंत्रित नेयहि-नियंति नेही-मोटि त्या-यवार नवकार साहेष-नवकार स-भणागयं-अनागत, भिन्दि हिंत, नोफारसी हडाणे-एक्सलडाधु भभ्यच्छ-चपवास भिग्गा१-अभिग्रह ाणविकवि य मणसा. गांबिल-भाविल भणसण-भनद्यन विगइ-विगय लीगो-लीन क्या-क्यार बंद-ग्रंत डिमगंपराय-मृत्य संप्राय गीरारि-परिसारिग्रोड मह्त्याय-चवारक्षात्र वेय-चेदोपह्यापनीय नवकार-नोधार તાદવ-મદિવ ગેપતિ-ગેપતિ वंदर्य-विदस्य जसा-मनबर् शीजो-सीन साज-एवान

मावेण ॥ १

5

नवकार सहिय

#I hR !! र्पिनस्यादि चार प्यानमां रहेवो अने सामायिकादि पांच चास्त्रियो युक्त एतो हुं झाननो जाजनार पन नमस्कार ( नोकारसी ) सद्दित धनागत पत्त्रक्लाण कगरे (मनयी) करीत ? ॥१॥ अणागय अइक्षेते कोडी नियहि सागार अणागारा॥ गदिन) जनतार (ज्यातार गङ्ग), पस्मिनकृत, निरक्षेत, सन्नितिक् (संकेतगत्त) संकेअं अदाइयं दसहा ॥ २ ॥ दम जाम्हे प्यकान के यनामन, व्यक्तिहन, कोटि सहित, निषेषित, सागार ( सन्तरकात्र चनवा, प्रक्षम्थनि जानप्रथम्<u>वतत्त्रीतः ॥</u> ग्य-यने (म्याने नमस्कार सहितमनागतं, कदा करिष्यामि नावेन् ॥ १ ॥ धनागत मनिकान, योटि नियभ्यित साकार मनाकारम् ॥ ३० पर्मातरवने घंदर व्यारेडो गायाचीना व्यवस सङ्गेना खये. 14-4 परिमाण निरवरोगं, सांक्षेत्रं अर्थातातं दराया ॥ ए ॥ + TRING ME ME ME ME ME गरिमाण निरवसेसं,

ne(	ž .	ى	rel
अणाग्यं-अनागत, मविष्यम् ।	क्षवा-व्यारे	करिस्सामि-करीय	भावेण-भावे क्तीने फड-क्रालु
द्वान्त्र-ग्रांतम्	प्रासण-प्रमासमु	प्रधाणे-प्रतलवाणुं	वांबिल-माबिल

निरबसेस-समस्त, निरबशेष संकेषवियं-संकेत यह ग्रयुङ् भद्धाऽ**यं**-अधीतीत कीटि महि-क्षीट महित अर मने-अनिक्रानिक

> अभिग्गह-अभिग्न भभ्यच्छ-जयवात भगसण-भनग्रन वेगइ-विगय

हिमांपराव-गुल्म संप्राय તિદ્યારિ-વરિસ્તપશ્ચિશ र स्टिताय-चवारत्यात

ग्वकार-नोकार

भोरमि-चोरसि

नहित्य-महित

रेष-चेशोपस्यापनी

(1) - (1)

९७ मा पच्चरकाणरयना वहारनी गाथाञीना अधरा शब्दोना अर्थ. अगर्र-अगिर संदित ने भट्ट-नियंत्रित

करिस्सामि-क्रांज

निष्यसेसं-समस्त, निष्यक्षेष मजागारा-अग्गर रहित परिमाज-परिमाज गंकेभं-संकेतवाळ  $\epsilon$ 

> डक्ट्रे-अतिकांत मावेण-भात्रथा

दसरा-दश्चम्हार(२)

**ম**হায়েयं−স্থানী**ন** 

नागार-आगार महित

नेयष्टि-नियंत्रिग तेवी-क्रीह

अणागय-अनागर, भनिष्य रित, नोक्तारसी

जिल्ल-जिल्हा

नाज-रवान

फपा-फपार

नाणविऊवि य मणसा, पिंडध्यज्झाण सामाइयवयछीणो

॥ श्री पचत्काष्परय ॥ १ए ॥

भाविषा ॥ १

मणगय, कया करिस्सामि

नवकार सहिय

विउ-जाणनार मणसा-मनबड

710-11

लीगो-लीन

ब्द-ग्रत

रिस्त्यादि चार घ्यनमां रहेखे अने सामायिकादि पांच चास्त्रियो युक्त एशे हुं झानसे | नित्त) जनार (जातार नृदेत), विमाणकृत, निरातेत, संक्षेतिक् (संकेतराख्न) थाने ज्ञानार दन नमस्कार ( नोक्तरसी ) सहित घनागत पडचख्ताण क्यारे (मनयी) करीय ? ॥१॥ र्म त्रान्तुं प्याकान के जनानक, व्यक्तिकान, सोटि सहित, निर्मापत, सागार ( आगार अणागय अडकंते कोडी नियहि सागार अणागारा॥ 11-17 (Kil)) परिमाण निरवसेसं, संकेअं अद्दाइयं दसहा ॥ २॥ नस्य-म्र 11-11 गीन-गीना द्यनागत मनिकालं, कोटि नियन्तित साकार मनाकारम् ॥ ३७ वर्धात्वयत्री श्रीम प्रतोत्ती मामायोमा स्पत्त सभीमा स्पर्ध. ज्ञानिवृष्टिः च मनसा, पिष्ट्यध्यात् सामापिकनतवातः ॥ नमस्कार सदितमनागतं, कदा करित्यामि जावेन् ॥ १ ॥ ग्रिमाण निर्ययोपं, मांक्षेत्रे अर्थातीनं दश्या ॥ ए ॥ かかかん THE STATE OF THE S 13. Art 1 عددي - ده عد رفد ي Kabi 44 441 なんだってない men amegin, n. 2, n. ادال) جرة، مدرخصرة داريا عليا

	• .			_:	٠.						-	
)· u(	3	ي	) <b>V</b> (	2/	9	×C.	<u>`</u>	<b>}</b> ??(	2/	9	u/	7
। अजाताई-बातार रहित	afrarat_nfarm	Istaali Istaali	₩ - ₩ (3	निरबसेसं-समस्त, निरनसेव,	44	संक्षेत्रिय-संक्षेत्र यह मएन्डे	अद्यार्ष-मधीनीत	ना घर्ष.	statement-want after	מעניים ביים אינור נולים	Press - 41(41)	ार्यस्तरान्त्रमस्तं, निरंबश्चा
मनागर-मनागत, मिन्यमी   भगामाई-मामार मृहित	KTI-TTI	प्रशिस्मामि-म्तीत	मारेग-मारे क्तीने	मा है रे-मिक्तिने	क्तीट गार्र-क्तीट सहित.	निषष्टि-निषंतिष	गागारं-भागार माहित	गायाजेना व्यवस शब्दो	करिस्मामि-क्त्रीज (१)	मावेण-मावगी	यास्त्री-प्रतिकान	
20-10-1	לבותם-בבות			मन्यवह-उपरांत	अष्याग्ण-भन्त्रन	अभिगार-अधिवर	स्मिर-स्मिय	रिष् मा पर्व्यस्त्राषरयना वहारनी मायाठीना व्यवस शब्दोना ह्यके.	मय-यन	लीजो-लीन	नदशार सहियं-नद्यार स-   अग्रहेते-प्रतिकान	-
Min-levin	पप धरावत्यावनात	wintt-ginitegie	Uraiferia-den eigerg	अरितायाय- ययास्तान	אנגנונ-יינומונ	mita-nita	લાલા-વાલલ	्र स		रि उ-आजनार	म्लासा-मनग्र	ומנית-ומנים

नियष्टि-नियंत्रिष नेश-क्रीट भजागपं-भनागा, मुबिरय लि. नोहारक्ष

विरूष-विदक्त साथ-एदान

,ड्रमभेष्ट) शामाहाद्

II 88 II

लोकेश-संक्षेत्रवाखे मद्वाइपं-भयति पागर-यागार महिन क्या-क्यारे

नाणविऊवि य मणसा, पिंडय्यज्झाण सामाइयवयछीणो। दस्रा-दस्य महार (२) ॥ श्री पचक्काणुरस्र ॥ १ए ॥

भावेज ॥ १ ॥

मणगय, कया करिस्सामि

साहेय

नवकार

RR

सहित ) खनागार (खागार रहित), परिमाणकृत, निरवयेर, सांक्रेतिक् (संकेतबाढ़ ) खने ंदस जाततुं पचस्काण ठे. खनागत, छतिक्रान्त, कोटि सहित, नियंत्रित, सागार ( खागार जाणनार पंण नमस्कार ( नोकारसी ) सिद्दित ध्यनागत पञ्चएताण क्यारे (मनथी) करीत ? ॥१॥ सिन्त्यादि चार ध्यानमा रहेलो छने सामायिकादि पांच चास्त्रियो युक्त एत्रो हु क्राननो अणांगय अइकंते कोडी नियदि सागार अणागारा ॥ ग्य-त्रते (मतीने) संकेअं अद्वाइयं दसहा॥ २॥ पदम-पहेर्न बीय--बीजा 321-34 ध्यतागत मनिकान्ते, कोटि नियन्त्रित साकार मनाकारम्<u>,</u>॥ २० धर्मागरथनी छंदर छावेद्यी गाथात्रोना छयरा ज्ञाङ्गेना छर्षै. हान्नदिद्धिः च मनसः, ।५०८५ ऱ्यान सामाधिक्षयधापः ।। नमस्कार सडितमनागत, कदा करिष्यामि नावेन् ॥ १॥ प्रिमाण निरवशेषं, सांकेतं अर्थातीतं द्याया ॥ ए ॥ \*XXXXXXXXXX गरमाण निरवसेसं. र खद्धा पचस्काण.॥ १॥

3															
	¥ .		-ند	_:		_									
nt.	5	S	nel	2/	D.	r.C	2	Fr:A	2/	9	re j	~	34	<b>(</b>	J
ं अजामार्-आमार सहित	The second second	414419-414419	46-4(g	निष्वसेसं-समस्त, निष्वशेष,	<b>-</b>	संकेषवियं-संक्षेत्र यह मएन्डे	असारय-अर्थातीत	ना छाथू.	-S	्राचानारा जानार सहत	निरम्भेरं साम्	11/4 to	માજમ-મજનવાલું	असार्य-अयात्त्र	100000000000000000000000000000000000000
अणागयं-अनागत, मनिष्पा	क्या-क्यारे	करिस्सामि-करीय	भावेण-भावे करीने	अर् मंत-भतिकातने	क्रीट महि-क्रीट महित.	नियहि-नियंत्रित	सागार-भागार सहित	१७ मा पच्चरकाणरयना वहारनी गायाठीना श्रघरा शब्दोना श्रर्थ.	करिस्सामि-प्रशेज (१)	भाषेण-भावधीः	अइक्टो-अनिक्रांत	कोश-मोन	नियह-नियंतिक	सागार-आगार सहिक	
यीगा-ग्रीमा	एकातन-एकातमु	प्रज्ञाणे-प्रज्ञाणुं	आंबिल-भाषिक	अञ्चलकु-उपनीत	अणसण-अनग्रन	. अभिगाह-अभिग्रह	बिगर-बिगय	च्चत्काषरयना वहारनी	चय-मत	लीगो-लीन	नवकार सहियं-नवकार स-	हित. नोक्तारसी	अणागय-अनागन, भनिष्य	फवा-कवारे	
संबो-संग	पय-पर्वापत्यापनीय	वरिदारि-वरिदारिकुञ्जि	प्रदुमांपराय-यूश्म संप्राय	अर्एएसाय-चर्चारक्षात	नवद्यार-नोग्रार	सरिय-महिन	वार्यात-वार्यात			बिड-जाणनार	मणसा-मनबद	विद्या-विद्य	क्षाण-ध्यान	सामार्य-सामापिकता	
3	×	<u> </u>	9	C	ۍ	~=	<i>ت</i>	D.	ေ	S	»·C	1	٥,	ć	S

सहित ) अनागार (आगार रहित ), परिमाण्डत, निरवशेर, सांकेतिक् (संकेतराकु ) अते | ंदस जाततुं पचाकाण ठे. व्यनागत, व्यतिकान्त, कोटि सहित, निषंत्रित, सागार ( व्यागार , क्तिस्यादि चार ध्यानमा रहेद्यो अने सामापिकादि गांच चास्त्रियो युक्त एतो हुं इतनते || जाणनार पंग नमस्कार ( नोक्तरसी ) सहित व्यनागत पञ्चल्हाण क्यारे (मनयी) करीरा ? ॥१॥ |। क्य-जने (फरीने) अणागय अहक्ते कोही नियहि सागार अणागारा ॥ परिमाण निरवसेसं, संकेअं अदाह्यं दुसहा ॥ २ ॥ मी-नीना क्ट्रम-पहेंग्रे मुद्रो-१द्र २० पर्मातप्यनी श्रंदर छावेद्यो गायात्रोना छपरा शुब्दोना छपै. अनागत मनिकान्तं, कीटि नियन्त्रित साकार मनाकारम् ॥ हात्रिद्तिः व मनसा, विक्हथध्यान सामायकत्रततानः ॥ तमस्कार सडितमनागतं, कदा करिच्यामि. जावेन् ॥ १ ॥ प्रमाण निरयकोपं, सांकेतं छाथातातं दराया ॥ ए ॥ 部中華 ज्ञीत्र-शीयत मात्र-मात नजुषुनो-कापगुनिनाओ क्षणुणा-क्षत्रगृतिकात्रो मगपुची-धनगुप्तिराजी 214-214 छद्रा प्यस्ताप.॥ २॥ द्सि-रहि, मनित्रपरि صعوا عالا

11 5R **ಹಿಲ-**≂ಗವು ગાદ-માતિ सोग-ग्रोफ भय-भय हिरिनी गायाजेना बुटा शब्दना खर्ष पढमवय दाने युक्तश्य प्रथम त्रत शुद्धः ॥ श्री धर्मोगरथ ॥ २० । परम-पहेला मया-म्य ओर-लोब 4-30 한 명리 3 मिव-वाबमा र्ग (य- व)मा नाण-ग्रान अभी-युक्त . ॥ ३४ ॥ . इमिष्टर ही।गोर्हा

शीयांगादि रथसंपद्

॥ श्री कामावस्थास्य ॥ २१ ॥

इष्टिय-सी(नो) 1-18

नग-संग

बर्जित चपुरस कारान् न स्त्रो चिन्तान् मुनीन् वन्दे । जेंछो मनुष्यनी स्रीना संगने। मनयी पण मोह करता नथी ये नो कुर्वन्ति मोहं, मनुष्य स्त्रीसंग जे नो करन्ति

\*XXXXX

सरीस्सा सस्कारने बजेंद्रो ठे थमे जेथो स्त्रीमी चिन्ता

I AR II सूत्रनां वंष सारु बीजा बखाषीये ठीए. योग त्रख, ते मनो त्रख, करख त्रख, सहार चार, ह|ऽय पांच, नामाञ्जे प्रत्योकाया|दक दरा, ए रीते दीद्रांगना जे श्रदार हजार नेद तेत्रे निःपनी के० निपजंद याय तेज 11 12 11 11 समज श्री शीवांगरथनी गणतरी करवानी समजुती ह्ये विशेषे एनी संख्या देखाने छे. त्रयः-योग त्रषः, करष त्रषः, संज्ञा चार, इंडिय पांच अष्ठारसगरम <u> अर्थः-इहां प्रथम यांग पत्र</u>ो करणाड

रवस्वर्द्ध ॥ त्रल ॥

नी गायाठीना द्वटा शब्दोना खर्ष.॥ 😝 🛚 🖽 ध

३१ मा कामागरगारयनी नित्र पहारनी गायाधेना बुटा शब्दोना अर्थ.॥ < जुरिमिष्य-मनुष्यनी सी

| गायाजेना द्वटा शब्दांना छाथे. ॥ गयुमकारे-ग्रास्ति साकार | मिले-पिषार करतार नन्तरे ग्रिज-सीलो | स्देन्यांतुष्ठे (१)

> ાંવ∽ાંવ ⊓ોાંજિ⊸યોગાંઉત્ર

(3)

. सोइंदि ॥ ॥ श्री कामावस्थारथ ॥ २१ ॥ जे नो करनित

नथी प्वा साधुद्योंने चिन्तान् मुनेनि बन्द् ॥ १ ॥ करता नुस् करता नर्थ। विचार जेंथो मनुष्यनी स्रीना संगने। मनथी पण मोह ः वजेंद्यों ठे खने जेथों स्त्रीनी चिन्ता वर्जित वयुस्स कारान् न स्त्री (

ווו. ז נאנואלי וופחו

S AR अर्थ:-इस् प्रयम गोग पूर्वी सुत्रनां यंथ सारु वीमा बखाबीये ठीए. योग त्रथा, ते मनो प रीते शीखांगना ने खदार हजार नेद तेनुं निःपनी केण निषज्ञं याय तेज ोगादिक जाखवा. 'ईहाँ गायांने धुरे करखाइ परले करतुं जेनी ब्रादिमां ठे प्वा जष करण तथा समण धमाय शक्माज ॥ ठिई मावणा एसा॥ ३॥ ग्रहारादि चार संका जाण्यी. अने सोया के० शोजादिक पांच इंडियो जाणुबी, श्री शीवांगरथनी गणतरी करवानी समजुती. ह्याति करणे सन्ना, इंदिय भोमाइ समण हुवे विशेषे एनी संख्या देखाने छे. करणाड्ड तिकिन्तोगा मन्न काआंच ध्ययः-योग त्रण, करण त्रण, संज्ञा वार, इंडिय प सहस्ताण, अडारसगस्स अजीव ब आहाराईसन्ना, चउसोया

हि स्वसंबद्ध ॥ अर्ज ॥

= 2° णयं:-नोमाइ के० घुप्पीकायादिक नवजीय थाने खजीय साथे दश याय. श्रमण धर्म ते ह्यां-<u>च</u> प्रकारे प्रयोक्त प रीते विष्टेक्त यंत्र पटाविक जपर सखवी. 100 सहस्स ह्वा एवं तुछ तेहिज देखाडे छे. Hoa <u>र्धाक</u> ड्स करइ मणण मह्या आहारसन्न ्य मण्ज ·देमसूक्त्रः II sh II

|छोता पौच प्रकार ने माटे पोयसें याय. ते मात्र एक छाहार संक्षा पोगेकरी छं। जेद यपा ने. ते मात्र ओदोस्टियने सो नेद याय ठे. तेमज याकीनी बुसुराहिक इंडिज्रोना पण प पूर्ये-क रीतीए सो सो नेर थापठे. ए एम सर्व संख्या एकठी करीए ते वर्ष पांचर्से याय ठे. केमके इंदि एज प्रकारमा घुवेंक व्यनिवापे करी मादेवादि योगात् के० मादेव व्याजेवादि दरापद सं-प्रापंत्रने संपोगे मीत्रो नेद, ए रीते पृष्धीकायनो ष्यात्रय करी एटले पृष्वीकायारंज एया व्यक्ति झपे करी, दशयति पर्मे करी, दश जेंद ते दश सीखिकव्य याय ठे. ते वळी व्यप्पकायादि नव स्यानने विषे पण अपि राज्दे करी दशमा स्थाननी पेरे आफ्रमण करीए, ते वारे सर्वनेर प्राक्रत हमायुक पृथ्वीकाय जीवारेन को नहि. ए शीखतुं प्रयम थांग व्यायिनांथित एट्से प्राप्ट ठे. ह्ये होप ठे ते पण ब्रतिदेशे करी देखाने ठे. गोगे करी, एटठे जेम पूर्वे क्षमायुक्त एक जेद थयो तेम मार्दवने संयोगे बीजो जेद, तेमज एक शीबांग आविर्ताषित ठे. पटले मने करी बाहार संज्ञाराहित यको ओवंडियनो संवर करी अये:-इहां नकास्केट काणवक्ष्य प्रयम याग (रंकाया ठ, त मनसा ए प्रयम कला ठ. एवी रीतीए धुंन करे ! ते कहे ठे. पुष्वीकाय जीवारंत्र करे नहीं एवं तारपर्य ठे. एणे प्रयम नीवस्थान कृमायुक्त के व्हांति संपत्र एथे करी प्रयम प्रमण्यमें नेद जाणुनो. ए प्रकारे करी गहारसन्न क्षिणजढगों उसिके॰ ब्याहार संज्ञा किरहित यतांज प्रथम संज्ञा तथा व्याक्यताए. क्ती तिसेष्म क्यों ने समादिक गुण जेनो, एवी श्रोत्रंडिपनी प्रतृति तेषी प्रयमंडिय कहेलीने. प्णे करी एकत्र कर्षांची एकसो संख्या थाय हे.

2

न करात्रे तेना पण ठ अंदार हजारज याय ठे. एम कंश्नयी मंग जो छा स्थले, बीधा होय तो पना घषाज जेद घाय है. हरी संयोगने विसे सात विकड्प याय है. एयाज करखने विसे व्यकायादि [ .कुमनंग्रह स्थतंबह.

वि रोप नपसंज्ञादिक त्रधेना पष पांचर्से पांचर्से जेंद ए पूर्गोक रीतेज याय. एम सर्वना मळी योगाने प्राप्त थएला ठे. तेमज बचन छाने काय एक ये इरयादिक संयोगे शीनो परस्पर ग्रुणाकार, कवाँ होप तो घेशीस व्ययज्ञ, चोराग्नी फ्रोक, एकावन साख, चेसठ दुजार याय हे. ए ह इजार मात्र पक हजार तेवीस जंग थाय. ए प्रमाणे क्रमादिक्रते विवे वण् । इत्यादिक संयोग **छाने ध्यनुम**ति नेर थाय हे. तो पत्री खडार हजारन केम क्या द छे, ए सर्वे मेखळीए त्यारे शोखना जेद..एकत्र

्सीयांग्ना जंगना शेव सद्जाव छे प्रदेसे श्रावक धर्मनी पेठे चीजा लंग करी क़ी में उत्तर

प्टेंबा शोजांगरच्य

। अन्यथा सर्वे विरतीज यनार नहि एना यंत्रनी स्थापना

जाष्युं, कार्य

जाबी सेवी.

राप एकोक्त

गणना समजी लेगे.

गीस रयनी

श्री शीलांगादि स्थ संग्रह. सोहिरिया छैन प्रयाप्ति । वीवानिर।



જારે કર્યો છે. જારે કર્યો છે. HARATOR CODE SOFT HARBOR CORES CODE COMPANY श्री शीलांगादि स्थ संग्रह. मेहिरिया के प्राप्त । समाप्त

ලිහිම මාසින් දෙකුණු ලැබ

श्री शीलांगादि स्थ संग्रह. समाप्त.

द्रोहित्या हैन वदान्य । द्रोडानिर



श्री शीलंगादि स्थ संग्रह समाप्त.





